ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
ISSN No.: 2347-2944, RNI TITLED No. :UPBIL04292,
RNI REG. No.: UPBIL/2014/66218, SOCI.REG. No.: 561/2013-14 Vol.-5, No.-II, PP-212-215,YEAR- DEC.2016

पूर्व माध्यमिक स्तर के इतिहास विद्यार्थियों के वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को दूर करने में क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रायोगिक योजना का अध्ययन

❑ 1. डॉ0 मायाशंकर
❑ 2. डॉ0 भूपाल सिंह

अनुसन्धान नवीन ज्ञान में वृद्धि की एक क्रियात्मक प्रक्रिया है। क्रियात्मक अनुसन्धान भी मूल अनुसंधान का एक भाग है जिसमें मौखिक समस्याओं का अध्ययन, नवीन तथ्यों की खोज, नवीन सत्य की स्थापना तथा नवीन सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है। हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है। यह एक अनिवार्य विषय है। बहुधा छात्रा–छात्राओं में वर्तनी सम्बन्धी तथा लिखित कार्यों में अनेका–नेक अशुद्धियाँ पाई जाती हैं। प्रस्तुत कार्य उन्हीं को दूर करने तथा भविश्यगत वर्तनी सम्बन्धी समस्याओं से निजात दिलाने का एक प्रक्रम है। क्रियात्मक अनुसन्धान में शिक्षण युक्तियों को अपनाकर समस्या का समाधान किया जा सकता है। वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ दूर करके ही निज भाषा को समुअत किया जा सकता है। क्रियात्मक अनुसन्धान शोध समस्या से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होता है, जिससे चयनित समस्या के शोधन में सहायता मिलती है।

अनुसंधान एक प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मौलिक समस्याओं का अध्ययन करके नवीन तथ्यों की खोज करना, नवीन सत्य की स्थापना करना तथा नवीन सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना है। अनुसंधान एक सोद्देश्य प्रक्रिया है, जिनके द्वारा मानव जीवन में वृद्धि की जाती है।[1]

षिक्षा के क्षेत्र में समस्याओं के समाधान के लिए अनुसंधान का वस्तुनिष्ठ स्वरूप क्रियात्मक अनुसंधान कहलाता है। क्रियात्मक अनुसंधान एक विधि है जिसके द्वारा कार्य प्रणाली की समस्याओं का अध्ययन वस्तुनिष्ठ रूप में करके सुधार प्रक्रिया संचालित की जाती है। क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग केवल शिक्षा के क्षेत्र में ही नहीं अपितु सभी प्रकार की संरचनाओं में प्रयोग किया जाता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में अभ्यासकर्ता अपनी कार्य प्रणाली की समस्याओं के अध्ययन के लिए क्रियात्मक अनुसंधान का प्रयोग करते हैं इस प्रत्यय की उत्पति का स्रोत ''आधुनिक मानव व्यवस्था सिद्धान्त''[2] ही है। इस सिद्धान्त की प्रमुख धारणा यह है कि व्यवस्था के कार्यकर्ता में कार्य कुशलता के साथ–साथ समस्या समाधान की क्षमता भी होती है। उसके अपने कुछ मूल्य भी होते हैं। इसलिए कार्यकर्ता को उसकी कार्य प्रणाली की समस्याओं का समाधान का अवसर देना चाहिए।[3]

इस प्रकार क्रियात्मक अनुसंधान प्रजातन्त्र युग की देन है। यह प्रत्यय सामाजिक मनोविज्ञान की उपज है। शिक्षा के क्षेत्र में क्रियात्मक अनुसंधान का विकास सन (1926) में माना जाता है, क्योंकि सर्वप्रथम बंकिघम[4] ने अपनी पुस्तक 'रिसर्च फॉर टीचर्स' में इसका उल्लेख किया है। परन्तु स्टीफेन एम0एम0 कोरी[5] ने क्रियात्मक अनुसंधान का शिक्षा की समस्याओं के लिए सर्वप्रथम प्रयोग किया था। उनके अनुसार ''अभ्यासकर्ता अपनी समस्याओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है, जिससे सही कार्य को दिशा मिल सके और निर्णयों का मूल्यांकन कर सके। इसे अनेक व्यक्ति क्रियात्मक अनुसंधान कहते हैं।''

इतिहास विशय के छात्रों की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों में सुधार करने सम्बन्धी अनुसंधानिक समस्या का चयन, हिन्दी शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षण में अनुभव किया गया कि छात्र हिन्दी वर्तनी में अधिक अशुद्धियां करते हैं। छात्रों के गृहकार्य, निबन्ध तथा अन्य लिखित कार्यों में भी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियां पाई जाती हैं, आदि के आधार पर किया गया। विद्यालयों में हिन्दी विषय अनिवार्य है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा का स्थान दिया गया है। यह हमारी मातृभाषा है। इसलिए हिन्दी सबसे महत्वपूर्ण विषय है।

❑ 1. एसोसिएट प्रोफेसर बी. एड विभाग ,,एम.डी.पी.जी कॉलेज, 2. असिस्टेंट प्रोफेसर , बी. एड. विभाग, प्रताप बहादुर पीजी कॉलेज, सिटी, प्रतापगढ़ (उ0प्र0), भारत

क्रियात्मक अनुसन्धान की प्रक्रिया[6]–

अनुसंधान की प्रक्रिया में पाँच सोपानों का अनुसरण किया जाता है–

1. समस्या का चयन करना– किसी भी अनुसन्धान के लिए समस्या का चयन पहली आवश्यकता होती है। क्रियात्मक अनुसन्धान में समस्याओं को ढूँढ़ने के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना या समस्या की मौलिकता के सम्बन्ध में विचार–विमर्श करने की आवश्यकता नहीं होती। इसकी समस्यायें, अध्यापकों और प्रशासकों के दैनिक अनुभवों में विद्यमान रहती है। जो कठिनाइयाँ, बाधायें, असंगत प्रथायें उनके सामने आती हैं वे ही क्रियात्मक अनुसन्धान की समस्यायें होती हैं। इन समस्याओं की उपर्युक्त ढंग से परिभाषित करना तथा उसका भली प्रकार कथन करना उसी प्रकार आवश्यक होता है जैसे अन्य अनुसन्धानों में होता है।

2. समस्या के कारणों का निदान– इस चरण में शोधकर्ता समस्या के कारणों का पता करता है और निश्चय करता है कि इनका निदान हो सकता है या नहीं। समस्या का पूरा विश्लेषण शोधकर्ता को इसी स्थान पर कर लेना चाहिये ताकि आगे चलकर उसके हल में उसे कठिनाई का सामना न करना पड़े।

3. उपकल्पनाओं का निर्माण– समस्या के कारणों का पता लगाने का पश्चात् अनुसन्धानकर्ता उससे सम्बन्धित उपकल्पना का निर्माण करता है। उपकल्पना के निर्माण में अनुसन्धानकर्ता क्रियाओं और उद्देश्यों को ध्यान में रखता है। इस प्रकार के अनुसन्धान में उपकल्पना का निर्माण कोई जटिल कार्य नहीं होता क्योंकि समस्या भी सरल होती है।

4. उपकल्पनाओं का परीक्षण– उपकल्पना का निर्माण करने के पश्चात् अनुसन्धानकर्ता कुछ क्रियायें करता है और इन क्रियाओं के आधार पर उपकल्पना की सत्यता की जाँच करता है। शोधकर्ता को इन क्रियाओं से वांछित परिणाम प्राप्त नहीं होते हैं, तो वह अपनी उपकल्पना परिवर्तित करता है तथा उसके अनुरूप अपने अनुसंधान को आगे बढ़ाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि क्रियात्मक अनुसन्धान एक समय में एक ही उपकल्पना का परीक्षण करता है। क्रियात्मक शोध लचीला होता है और आवश्यकतानुसार अपने कार्य में परिवर्तन कर सकता है।

5. निष्कर्ष निरूपण तथा क्रियान्वयन– उपकल्पनाओं की जाँच के आधार पर अनुसन्धानकर्ता निष्कर्ष निकालता है तथा इन निष्कर्षों का आरोपण करता है ताकि समस्या का समाधान हो सके।

3. शोध समस्या का चयन– प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नांकित शोध समस्या चयनित की गई–

"पूर्व माध्यमिक स्तर के इतिहास विद्यार्थियों के हिन्दी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के दूर करने सम्बन्धी क्रियात्मक अनुसंधान की एक कार्ययोजना का अध्ययन"

4. शोध अध्ययन प्रणाली एवं न्यादर्श चयन– प्रस्तुत अध्ययन के लिये क्रियात्मक अनुसन्धान प्रणाली का अनुप्रयोग किया गया है, जिसमें कक्षागत समस्याओं तथा वर्तनी दोषों को निराकरित करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के लिये प्रतापगढ़ जनपद के दो विद्यालयों उच्च प्राथमिक विद्यालय सदर, प्रतापगढ़ तथा उच्च प्राथमिक विद्यालय भुवालपुर किला से कक्षा 8 में अध्ययनरत 25–25 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक विधि से प्रतिचयनित किया गया है। चयनित विद्यार्थियों में जाति विभेद, लिंग विभेद, वर्ग विभेद तथा उपलब्धि आदि का अन्तर नहीं रखा गया है।

अतः छात्रों की अभिव्यक्ति, लेख, साहित्य की दृष्टि से हिन्दी शिक्षण में विकास एवं सुधार की जरूरत है।

5. अध्ययन का उद्देश्य–

1. छात्रों को हिन्दी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के लिए जागरुक करना।
2. छात्रों की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों में सुधार करना।
3. हिन्दी में छात्रों की निष्पत्ति के स्तर को उन्नत करना।
4. हिन्दी की वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों के महत्व को

समझना।

6. कार्यकारी समस्या का विशिष्ट रूप–

"प्रतापगढ़ जनपद के पी0बी0 इण्टर कालेज के कक्षा 8 के छात्रों के हिन्दी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का अध्ययन"

7. परिकल्पना–

1. हिन्दी में लिखित कार्यों को समुचित ढंग से कराकर भली–भॉति निरीक्षण किया जाये तो वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों में सुधार किया जा सकता है।

2. हिन्दी की पाठ्य–वस्तु के कठिन शब्दों का व्याकरण से समन्वय (सन्धि–विच्छेद) किया जाये तो वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों में सुधार किया जा सकता है।

8. क्रियात्मक अनुसंधान की कार्य योजना–

कार्य योजना	विधि	अपेक्षित साधन	समय
1. कक्षा 8 के छात्रों को इतिहास चक्र्य पुस्तक के आधार पर लिखित कार्य दिया गया	निर्देशन एवं परामर्श	पाठ्यक्रम की पुस्तकें	एक दिन
2. पूर्व लिखित कार्यों तथा विषयी कार्य विवरण का निरीक्षण	लिखित कार्यों की सूची बनाना	समय सारिणी, कार्यों का नियोजन	एक दिन
3. छात्रों के लिखित कार्यों की जांच	कक्षा नायक तथा प्रखर छात्रों से परामर्श	समय सारिणी, कार्यों का नियोजन	एक दिन

9. विश्लेषण एवं निष्कर्ष– हिन्दी भाषा में वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों के सुधार हेतु बनायी गयी रूपरेखा के अनुसरण से ज्ञात होता है कि इन छात्रों के भाषा सम्बन्धी त्रुटियों पर ध्यान नहीं दिया जाता। वर्तनी सम्बन्धी त्रुटियों की स्तम्भाकृति करने तथा प्रतिशत त्रुटि की गणना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि छात्र हिन्दी भाषा, मातृभाषा होने के कारण उचित महत्व प्रदान नहीं करते। 40 छात्रों की कक्षा में 70 प्रतिशत छात्रों में भाषा सम्बन्धी वर्तनी अशुद्धियां पायी गयी। भाषा में वर्तनी सुधार कार्यक्रम परीक्षा पूर्व से आरम्भ करनी चाहिए। शिक्षकों को अपने निरीक्षण, कार्य अनुभव छात्रों की प्रतिक्रियाएं आदि के आधार पर वर्तनी सुधार कार्यक्रम का संचालन किया जाना चाहिए।

10. शैक्षिक निहितार्थ– क्रियात्मक अनुसंधान में शिक्षक अपनी शिक्षण युक्तियों को प्रयोग में लाकर समस्या समाधान कर सकता है। हिन्दी में वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों को कम करके ही भाषा तथा हिन्दी शिक्षण को उन्नत किया जा सकता है। क्रियात्मक अनुसंधान में शिक्षकों को समस्या से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होना चाहिए। चयनित समस्या का स्वरूप वास्तविक हो तथा परिकल्पनाओं की सार्थकता में कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। इस प्रकार छात्रों में हिन्दी भाषा वर्तनी सम्बन्धी सभी त्रुटियों को सुधार जा सकता है क्रियात्मक अनुसंधान के द्वारा निम्नांकित समस्याओं का भी समाधान किया जा सकता है।

1. विद्यालय की कार्यप्रणाली में सुधार तथा विकास करना।
2. छात्रों तथा शिक्षकों में प्रजातंत्र के वास्तविक गुणों का विकास करना।
3. विद्यालय के कार्यकर्ताओं शिक्षक, प्रधानाचार्य, प्रबन्धक तथा निरीक्षकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।
4. विद्यालय के कार्य–कर्ताओं में कार्य कौशल का विकास करना।
5. शैक्षिक प्रशासकों तथा प्रबन्धकों को विद्यालय की कार्यप्रणाली के सुधार तथा परिवर्तन के लिए सुझाव देना।
6. विद्यालयों की परम्परागत रूढ़िवादिता तथा यांत्रिक वातावरण को समाप्त करना।
7. विद्यालय की कार्य–प्रणाली को प्रभावशाली बनाना।
8. छात्रों के निष्पत्ति स्तर को ऊँचा उठाना।
9. शिक्षण के स्तर की प्रति तथा गुणात्मक विकास से योजना का प्रत्यक्ष सम्बन्ध होना चाहिए।
10. योजना के मूल्यांकन में विश्वसनीय तथा वैध साक्षियों को ही प्रयुक्त करना चाहिए।
11. परिकल्पनाओं के प्रतिपादन में उन कारणों को ध्यान में रखना चाहिए कि शिक्षक के नियंत्रण में हों।
12. योजना की रूपरेखा का स्वरूप मितव्ययी होना चाहिए।
13. विद्यालयतथा कक्ष शिक्षण की समस्याओं के चयन तथा अध्ययन में वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाना

चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. कुलश्रेष्ठ, एस.पी. – ''शैक्षिक तकनीकी के मूलाधार'' विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, पृ0सं0 323–335.
2. डॉ. शर्मा, आर.ए. – ''शिक्षा तकनीकी'' लायल बुक डिपो,मेरठ (यू.पी.), पृ0सं0 620–633.
3. डॉ. सिंह, भूपाल व मिश्रा – ''हिन्दी वर्तनी अशुद्धि मापनी सुनील कुमार।
4. नेशनल सिम्पोजियम – 9 जनवरी 2011 फैकल्टी ऑफ एजूकेशन, राजा हरपाल सिंह पी.जी. कालेज, सिगरामऊ, जौनपुर।
5. सिक्स सर्वे ऑफ एजुकेशन – एन.सी.ई. आर.टी., पृ0 सं0 152–165 रिसर्च 1993–2000.
6. अस्थाना, विपिन व श्रीवास्तव विजय– शैक्षिक अनुसन्धन एवं सांख्यिकी 2012 प्रकाशन अग्रवाल पब्लिकेशेन आग्रा पृ0 सं0 143–149.